बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिख्कर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिख्कर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक – 84 सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार फरवरी–मार्च, 2020 मूल्य 5 रूपए

राजनीतिक दलों से क्या चाहते हैं, सड़क एवं कामकाजी बच्चे?

बालकनामा ब्यूरो

सरकार हम बच्चों के हितों को कब अपने मुद्दों में शामिल करेगी? बच्चों ने इस बात पर बड़ी नाराजगी जताई और गंभीरता के साथ बताया कि इसी वजह से अशिक्षित, सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं, क्योंकि माता-पिता भी बच्चों पर काम करने के लिए दबाव डालते हैं। इसलिए बच्चों की पढ़ाई की ओर से ध्यान भटकता चला जाता है। उनके दिमाग में यह बात बैठा दी जाती है कि पढ़ाई करके पैसे कैसे मिलेंगे? सिर्फ काम करने से ही पैसे घर में आते हैं जिससे माता-पिता को सहारा मिलता है।

16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मनिया: मैं सब्जी की दुकान लगाता हूं और काम भी करता हूं। क्योंकि मेरे परिवार में कोई भी व्यक्ति कमाने वाला नहीं है। इसलिए घर परिवार चलाने के लिए सब्जी बेचनी पड़ती है। ज्यादातर बच्चे होटल, ढाब्रो में, जहां तन्दूरी रोटी बनती है, व चाय की दुकानों पर काम करते नजर आते हैं। हमारे यहां होटल या ढ़ाबों में काम करने वाले बच्चों को प्रतिदिन 100 रुपए मिलते हैं। उसने कहा कि अगर यह बच्चे काम करने से मना करते हैं तो इनके माता पिता मारते हैं। बच्चे माता-पिता के अत्याचार की वजह से काम पर निकल जाते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोलू: मैं चाय की दुकान पर काम करने जाता हूं। सुबह पांच बजे से लेकर रात 11 बजे तक मैं काम करता हूं। इतनी मेहनत करने के बाद मुझे सौ रुपए मिलते हैं। इसमें से मैं 50 रूपए घर पर देता हूं और 50 रूपए अपनी जेब खर्च के लिए रखता हूं, जिससे मैं अपनी जरूरतों को पूरा करता हूं।

बच्चों की मांग है कि सरकार जब भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों से सबंधित कोई भी कानून बनाती है, तो हम बच्चों से सलाह अवश्य ले। जो लोग बच्चों से जरबदस्ती काम करवाते हैं, उन्हें बच्चों से काम नहीं करवाना चाहिए और बच्चों के अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए। सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए वोकेशनल टेजनिंग सेंटर खोले जाएं, जिनमें उन्हें उनकी पसंद के हिसाब से मन चाहा काम सिखाया जा सके, ताकि उनके आने वाले भविष्य को सही दिशा मिल सके। हम बच्चों का किसी भी प्रकार से शोषण नहीं होना चाहिए।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के खेलने के लिए पार्क की बेहतर व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अलावा बच्चों ने यह चिंता जताते हुए कहा कि राजनीतिक दलों से हम चाहते हैं कि हमारे तमाम जरूरी मुद्दों को वे अपने एजेंडे में शमिल करें। हम यह जानते हैं कि अभी हम बच्चे हैं और वोट डालने का अधिकार अभी हमारा नहीं है लेकिन यदि राजनीतिक दलों ने अपने एजेंडे में हम बच्चों के मुद्दों को शामिल नहीं किया, तो हमारा बेहतर भविष्य और विकास कैसे

शेष पृष्ठ 2 पर

बच्चों की मांगें और भिक्षावृत्ति रोकने के लिए कुछ सुझाव

- हर जगह में पहले तो ऐसे बच्चों और परिवारों की गिनती करें, ताकि इनकी स्थिति का अंदाजा हो सके।
- ऐसे बच्चे और इनके परिवारों से लगातार सम्पर्क बनाया जाए, ताकि इनकी परेशानियों का पता चल सके।
- किसी भी बड़े शहर में भीख मांगने वाले जो भी व्यक्ति या बच्चे हैं, उनके लिए कोई न कोई कार्यक्रम जरूर हो।
- सरकार हम बच्चों के माता-पिता को कुछ ऐसा छोटा-मोटा कामकाज दिला दे; जैसे सामान पैक करने वाला काम, कागज के लिफाफे बनाने वाला काम, घरों में बड़े लोगों के कुछ सामान्य काम- जैसे बुजुर्गो की सेवा करने का काम, घरेलू कामकाज, कपड़ों की पैकिंग का काम। ऐसा करने से हमारे माता-पिता के पास अच्छा रोजगार होगा तो वह हमें भीख मांगने नहीं भेजेंगे। इस तरह बच्चों को भीख मांगने से आजादी मिल जाएगी।
- राजनीतिक दलों को यह मानना पड़ेगा कि भीख मांगने वाले बच्चो की समस्या है, तभी हम उन बच्चों से सीधा सम्पर्क कर सकेंगे।
- सरकार संपर्क नंबर जारी करे, जहां मजबूरी में भीख मांगने वाले बच्चे अपनी मजबूरी को बता सकें। उदाहरण के लिए हर जगह यह पोस्टर लगवाए जाएं कि यदि आप से कोई जबरदस्ती भीख मंगवा रहा है; या अगर आप मजबूरी में भीख मांग रहे हैं तो इन नम्बरों पर फोन करें या इस नम्बर पर फोन करके हमें बताएं। साथ ही साथ लोगों को जागरूक करने के लिए स्लोगन जैसेः 'भीख नहीं भविष्य दो', बनवाए जाएं। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माध्यम से इस विषय पर जागरूकता फैलाई जाए।
- ऐसे बच्चों के लिए खास स्कूल बनवाए जाएं।
- बच्चों के अधिकारों का हनन ना हो। बच्चों ने बताया कि जो लोग बच्चों से जबरदती काम करवाते हैं, सड़क पर जिदंगी गुजार रहे बच्चों के साथ शोषण करते हैं, उन्हें धिक्कारते हैं, उनके साथ बदसलूकी करते हैं, उन लोगों को कानूनी शिंकजे से बचाया नहीं जा सकता। हम सभी बच्चे उन लोगों के खिलाफ हैं, जो लोग किशोर अवस्था में बच्चों से काम करवाते हैं।
- बच्चो ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के माध्यम से बाल मजदूरी जैसे बड़े मुद्दे पर गहराई से चर्चा की और जाना कि कैसे बच्चे बाल मजदूरी में लिप्त होते जा रहे हैं।
- जो बच्चे अपने घरों में काम कर रहे हैं, उनके माता-पिता उनसे छोटा-मोटा काम करने को बोलते हैं लेकिन बच्चे घरों में भी बड़े-बडे कामों में लिप्त होते जा रहे हैं। माता-पिता छोटे-छोटे बच्चों को घरों में ही कामों में लिप्त रखते हैं। वह पूरे दिन काम करते रहते हैं, जो बच्चों के लिए बहुत हानिकारक है। इस तरह का काम करना बच्चों के लिए खतरनाक साबित हो रहा है।
- अब जो 14 साल के या उससे कम उम्र के बच्चे हैं, वह ज्यादातर फेमिली वर्क में शामिल होते जा रहे हैं। जो अपने माता-पिता के साथ काम करवाते हैं, वह शिक्षा से वंचित होते जा रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे आज भी अपने घरों में बड़ी संख्या में काम कर रहे हैं, क्या यह बाल मजदूरी नहीं है ?

- बच्चों ने बताया कि बच्चे अधिक संख्या में नशे में लिप्त होते जा रहे हैं। इस गंभीर मुद्दे को भी नजरअंदाज किया जा रहा है।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दिल्ली में कितनी संख्या है, यह भी नहीं मालूम। इस विषय पर कदम उठाए जा सकते हैं, जिससे हम बच्चों के लिए बनाई जा रही नीतियां बच्चों की संख्या को ध्यान में रखते हुए बनायी जा सकें।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चे; जो बच्चे अपंग हैं और सड़कों पर अपना जीवन गुजार रहे हैं, भीख मांगकर वह अपना पालन पोषण करते हैं, इन बच्चों के माता-पिता और बच्चों पर विशेष ध्यान देने का आग्रह करते हैं।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चों का भविष्य कामयाब करने हेतु उनके मुताबिक वोकेशनल टेजनिंग इंस्टीट्युशन खोले जाएं।
- लड़कियों के लिए स्पेशल सेंटर खोले जाएं।
- नशे के चंगुल में फंसे बच्चों के लिए सेंटर खोले जाएं।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उनकी पहचान बनाने के लिए उन्हें आधार कार्ड जैसे अन्य दस्तावेज बनवाने के लिए भी बच्चों के लिए सरल सुविधा हो।
- जो बच्चे सड़कों पर रहते हैं उनको लोग गालियां देते हैं और छोटे-छोटे मासूम बच्चों का अपहरण हो जाता है, इस पर भी रोक लगाने हेतु कड़े इंतजाम किए जाएं।
- छोटे बच्चों को दुकानदार नशीले पदार्थ बेचते हैं, इस पर भी रोक लगानी चाहिए।
- अनाथ बच्चों के लिए नए सेंटर और उनके पालन-पोषण के लिए राशन भत्ता दिया जाना चाहिए। यदि वह अपने रिश्तेदार के यहां रहते हैं। नशीले पदार्थों का व्यापार बंद हो।
- बच्चों को पीने के लिए स्वच्छ पानी मिले।
- बच्चो की झुग्गियां न तोड़ी जाएं।
- फ्री बिजली की सुविधा मिले।
- शौचालय बने हों और शौचालयों में हमारे लिए पेड-फ्री सुविधा हो।
- बाल विवाह जैसे मुद्दे पर सख्ती हो, इसके लिए कड़ी कार्यवाही हो।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संपादकीय

हैप्पी गणतंत्र दिवस कहते हुए और राजनीतिक दलों को बहुत-बहुत बधाई देते हुए 'बालकनामा' का यह 84वाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है। नव वर्ष 2020 में हम 'बालकनामा' के इस दूसरे अंक को प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस अंक में हमने देश की राजधानी दिल्ली में सड़कों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले अति गरीब, पारिवारिक संरक्षण और सुविधाओं से वंचित तथा उपेक्षित, शहर के प्रमुख स्थानों पर भीख मांग कर, पन्नी बीन कर, स्टेशन और चैराहों पर बोतल और कबाड़ा बीन कर तथा ढ़ाबों पर काम करके गुजर-बसर कर रहे बच्चों से संबंधित समस्याओं की जानकारियां आप तक पहुंचाने की कोशिश की है, ताकि इन बच्चों के साथ न्याय हो सके और वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ कर अपना सवार्गीण विकास कर सकें। इनके परिवार भी उपरोक्त कामों में लगे हैं। वे खुले में रात गुजारने को मजबूर हैं। स्कूल जाते समय मासूमों के साथ होने वाली छेड़छाड़, माता-पिता की उपेक्षा, काम के स्थान पर अत्याचार, बड़े-नशेड़ियों का दुर्व्यवहार जैसी घटनाएं अफसोसजनक हैं जिसकी वजह से ये बच्चे शिक्षा से भी दूर होते जा रहे हैं। स्कूल तो ज्ञान का पवित्र मंदिर होता है। लेकिन मासूमों के साथ जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर तो यही कहा जा सकता है कि मासूम स्कूल के आसपास भी असुरक्षित हैं। बच्चों ने राजनीतिक दलों के समक्ष अपनी समस्याओं को इसी उम्मीद में रखा है कि हम बच्चों की समस्याओं को जल्द ही दलगत एजेंडे में शामिल कर लिया जाएगा। 'बालकनामा' टीम इन मासूमों की समस्याएं समाज और सरकार तक पहुंचाने का प्रयास हमेशा करती रही है और इस बार भी कुछ अहम मुद्दे लेकर आपके सामने आयी है। अंक में छपी घटनाओं को पढ़-जान कर आपके मन में भी कई सवाल उठ रहे होंगे। आपको भी इन मासूमों की चिंता सताने लगी होगी। आप अपने मन की बात, विचार, सुझाव पत्र, ईमेल के माध्यम से संपादकीय टीम तक पहुंचा सकते हैं। आशा है आपका सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन हमें पूर्ववत मिलता रहेगा।

आर्थिक स्थिति से जूझते बच्चे इस प्रकार हैं

रिपोर्टर: किशन, पश्चिमी दिल्ली

हमारे समाज में अनगिनत ऐसे बच्चे हैं जिनकी कहानी बेहद दुखद हो सकती है। बालकनामा के पत्रकारों ने दौरा कर बच्चों के बारे में यह जानने का प्रयास किया कि आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण बच्चे किन हालतों में और कैसे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं? आईए जानते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोलू: इसके पिताजी का देहांत होने के बाद गोलू अब एक होटल में काम कर रहा है, क्योंकि गोलू अपने भाई बहन से बड़ा है और उसके कंधो पर इतनी कम उम्र में बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। गोलू के दो छोटे भाई और एक छोटी बहन है, जिन्हें गोलू स्कूल में पढने के लिए भेजना चाहता है। इसलिए वह होटल में काम करने के लिए जाता है। गोलू रोज सुबह 6 बजे से लेकर रात को 8 बजे तक होटल में काम करता है। इससे जो पैसे मिलते हैं उससे उसके घर का पालन-पोषण हो रहा है। गोलू की मम्मी भी कोठीयों में काम करने के लिए जाती है। क्योंकि गोलू को होटल से बहुत कम पैसे मिलते हैं। इसलिए गोलू और उसकी मम्मी दोनों काम करने जाते हैं। दोनों मिलकर घर का खर्चा चलाते हैं। गोलू से बात करने के दौरान पता चला कि जब वह होटल में काम करने जाता है तभी उनके परिवार को अच्छा खाना और पहनने के लिए कुछ कपड़े मिल पाते हैं। गोलू अपने परिवार के साथ किराए के मकान में रहता है। उसने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि काश मेरे पिता जी जिंदा होते तो मैं भी एक स्कूल में अपनी पढ़ाई कर रहा होता। पर दुख की बात है कि मुझे अपने पापा के मरने के बाद घर की जिम्मेदारी को निभाना पड़ रहा है। अपने घर का पालन-पोषण करने के लिए मुझे काम करने के लिए रोज जाना पड़ता है। यह मेरी मजबूरी के साथ मेरी जरूरत बन गया है, क्योंकि यदि मैं काम करने के लिए नहीं गया तो मेरे भाई-बहन मेरी तरह स्कूल जाने से वंचित रहेंगे। स्कूल जाने के लिए पहले खाना और कपड़ों की जरूरत होती है। जब मेरे भाई स्वस्थ रहेंगे तभी तो पढ़ने के लिए स्कूल जा सकेंगे।

पार्क में बढ़ती अश्लील हरकतें

बालकनामा ब्यूरो

सराय काले खां में एक आई पी पार्क है। वहां पर बच्चे खेलने एवं कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। इस पार्क में बड़े-बड़े लोग-लड़कियों के साथ अश्लील हरकत करते हैं। पूरे पार्क में वही लोग बैठे रहते हैं। छोटे-छोटे पेड़ों के नींचे छुपकर अश्लील हरकतें करते हैं। 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) नीलम ने बताया कि हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए पार्क में भी जाते हैं, क्योंकि वहां पर खेलने के लिए झूले लगे हुए हैं। एक दिन की बात है, जब हम लड़कियां झूला झुल रहीं थीं तो एक भैया, जिनकी उम्र लगभग 35 साल की थी, उस भैया ने आकर मुझसे बोला कि आपको एक वीड़ियो दिखाऊंगा। वह अंकल हमें अश्लील वीड़ियो दिखाना चाह रहे थे। उन्होंने बोला कि मेरे साथ

उस पेड़ के नींचे जाओगी तो मैं तीन सौ रुपए दूंगा। लड़कियां समझ गईं कि यह भैया हमारे साथ गलत काम करना चाहते हैं। इसलिए हम लोग वहां से भाग गए। वहां पर लोग हमेशा लड़कियों से गलत तरीके से बात करते हैं। वह लोग सही लड़कियों को गलत नजर से देखते हैं। अगर इस पार्क में ऐसे ही हालात रहे तो हम जैसे कूड़ा-कबाड़ा बीनने वाले बच्चों पर बहुत भारी पड सकता है। लेकिन इस पार्क में बहुत सारे गार्ड भी नियुक्त किए हुए हैं, फिर भी यहां पर किसी भी प्रकार से लड़कियां अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं। पार्कों में इस तरह खुले आम अश्लील हरकतें सड़क एवं कामकाजी बच्चों का रहना दूभर कर रही हैं। क्योंकि जो कपल पेड़ के नीचे बैठे होते हैं, उन्हे वह सभी लोग देखते हैं, जो आस-पास घूमते रहते हैं। और फिर वह लोग हम बच्चों को परेशान करते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी बड़ों से ही सीखते हैं, फिर वह भी आपस में उनके जैसी हरकतें करते हैं। ऐसे पार्कों में बहुत पाबंदी होनी चाहिए। हम बच्चे यही चाहते हैं कि दिल्ली सरकार इस आई पी पार्क के ऊपर जल्द से जल्द संज्ञान ले और कार्यवाही करे, ताकि पार्क में हम बच्चे अपने को सुरक्षित महसूस कर सकें और पार्क में खेलकूद सकें। उसके आस-पास बने स्कूलों में भी सुरक्षित पढ़ने जा सके।

राजनीतिक दलों से क्या चाहते हैं, सड़क एवं कामकाजी बच्चे?

पृष्ठ 1 का शेष

होगा?

बच्चों ने कहा कि हमारे माता-पिता को सही वेतन, रोजगार नहीं मिल रहा है, तो सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि उन बच्चों के माता-पिता की मदद करें, ताकि उनके घरों की स्थिति ठीक रह सके और वह अपने बच्चे को कुशलपूर्णक स्कूल भेज सकें। आजकल दिल्ली जैसे शहरों में लालबत्ती, मंदिरों, मस्जिदों में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जो एक चिंता का विषय है।

बच्चे आखिर भीख क्यो मांगते हैं? इस कार्य में बच्चों की इतनी बढ़ोतरी क्यों है ? बच्चों से इस मुद्दे पर सुझाव भी मांगे कि सरकार व अन्य कार्यकारी लोग बच्चों के पुर्नवास करने के लिए क्या करें ? इस समस्या से कैसे निपटा जाए, ताकि बच्चों को भीख मांगने से आजादी मिल सके और भीख मांगने वाले बच्चों को शिक्षा से जोड़कर उनका बेहतर विकास किया जा सके।

पत्रकारों ने सड़क, मंदिरों, लालबत्ती पर भीख मांग रहे बच्चों से मिलकर बातचीत की और उनका दर्द व मजबूरी जानने की कोशिश की कि इतने छोटे-छोटे बच्चे आखिर भीख क्यों मांगते हैं ? उन बच्चों से इस संबंध में सुझाव भी मांगे कि इस गंभीर विषय से कैसे निपटा जा सकता है?

इसी मुद्दे को लेकर पत्रकार ने 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कन्हैया: जो लोधी रोड की लालबत्ती पर भीख मांगता है, ने बताया, मैं अपने माता-पिता के दुर्व्यहार की वजह से अपने घर से भागकर आ गया था। मैं यहां अपना पेट पालने के लिए भीख मांगता हूं। अगर कोई मेरे माता-पिता को उस वक्त समझाता तो मुझे यहां लालबत्ती पर भीख नहीं मांगनी पड़ती।

15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) किशन ने अपनी मजबूरी बताते हुए कहा कि हमारे परिवार में यह रीति-रिवाज सदियों से चली आ रही है कि मेरे दादा-दादी भी भीख मांगते थे और हमारे माता-पिता भी बच्चों से भीख ही मंगवा रहे हैं। वह पढ़ाई-लिखाई करवाने के बजाय हमें भीख मांगने के लिए भेजते हैं। क्या इस परंपरा को बदला जा सकता है?

सरकार को चाहिए कि पुरानी रूढ़िवादी रीति-रिवाजों को समाप्त करने के लिए एक खास कार्य-योजना चलाये जिसके माध्यम से हमारे माता-पिता जैसे लोगों को जागरूक किया जाये और बताया जाये कि समय के अनुसार सब कुछ बदलता है। उन्हें इस बात की भी जानकारी दी जाये कि पुरानी रीति-रिवाजों का पालन करके वे अपने बच्चों का भविष्य बर्बाद कर रहे हैं। ऐसा करने से भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या कम हो सकेगी।

कैसे किया जा रहा है, बच्चों को मजबूर ?

रिपोर्टर: किशन, पश्चिमी दिल्ली

आज के समाज में आज भी बच्चे भीख मांगते हुए दिखाई देते हैं। वह बच्चे अपनी मर्जी से भीख नहीं मांगते हैं। उनकी कुछ मजबूरियां होती हैं जिसके चलते उन्हें दर-दर जाकर भीख मांगनी पड़ती है। पत्रकार ने बच्चों के साथ बैठक की। इसी दौरान पत्रकार 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल से मिला, जो कि अपने माता-पिता के साथ पश्चिमी दिल्ली में पुल के नीचे रहता है। राहुल के 2 छोटे भाई हैं। दुख की बात यह है कि राहुल को हर रोज भीख मांगने के लिए अपनी मम्मी के साथ जाना पड़ता है। क्योंकि उसके पिता जी शराब पीते हैं और वह अपने घर का पालन-पोषण नहीं करते हैं। घर में एक भी पैसा लाकर नहीं देते हैं जिससे कि मेरी मम्मी हम बच्चों का पेट भर सकें। इसलिए राहुल अपनी मम्मी के साथ रोज भीख मांगने जाता है, जिससे कुछ पैसे वह कमा लेते हैं और अपने घर का पालन-पोषण करते हैं। कड़ी मेहनत करने के बाद हम कुछ पैसे कमा पाते हैं लेकिन मेरे पिता जी मेरी मम्मी के साथ लड़ाई-झगड़ा और मारपीट करके सारे के सारे पैसे छीन कर ले जाते हैं और जब हम पैसे नहीं देते हैं तो वह मम्मी के साथ-साथ मेरे भाई और मुझे बुरी तरह मारते हैं, ताकि उन्हें शराब पीने के लिए कुछ पैसे मिल सकें। यदि राहुल भीख मांगने के लिए मना करता है, तो उसके पिता जी उसे बहुत मारते हैं और भीख मांगने के लिए जबरन भेजते हैं। राहुल अपने भाईयों को स्कूल भेजना चाहता है और खुद भी पढ़ने की इच्छा रखता है। इस मजबूरी के चलते वह स्कूल नहीं जा पाता, क्योंकि उसे अपने घर का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चे चाहते हैं ट्रेन की पटरी के पास दीवार बना दी जाए

बातूनी रिपोर्टर: दिव्या, रिपोर्टर: ज्योति

आन्नद विहार में लगभग 4000 तक झुग्गी-झोपड़ी बनी हुई हैं, जहां लोग अलग-अलग प्रकार का काम करते हैं। यहां के अधिकतर बच्चे कोठियों में काम करने के लिए जाते हैं। पत्रकार जब 15 वर्षीय मीना (परिवर्तित नाम) से मिला तो उसने बताया कि दीदी यहां पर आये दिन दुर्घटना होती रहती है। यहां के बहुत सारे लोग कोठियों में अलग-अलग जगह पर काम करने के लिए जाते हैं और बच्चे स्कूल जाते हैं। जो लोग स्टेशन के अन्दर दुकान लगाने का काम करते हैं या माल ढोने का काम करते हैं, वह लोग छोटे रास्ते के चक्कर में ज्यादातर पटरी के किनारे बने रास्ते से ही गुजरते हैं। बच्चों ने बताया कि यहां जो लोग काम करने के लिए पटरियों से हो कर गुजरते हैं, तो शाम को या रात होने पर हमारे यहां बहुत से खतरनाक हादसे होते रहते हैं जिसकी वजह से बच्चे बहुत चिंतित हैं। 16 साल की शिवा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारे यहां स्टेशन पर रात को जो भी रेलगाड़ियां निकलती हैं, उन रेलगाड़ियों में से कुछ चोर-उचक्के और मवाली लोग अचानक उतरते हैं। यह लोग चलती रेलगाड़ी में से किसी का भी मोबाईल फोन और पैसे छीन कर भागते हैं, जिसकी वजह से बहुत से बच्चों के माता-पिता को गहरी चोट आ जाती है। क्योंकि इस दौरान वह रेलगाड़ी की पटरियों पर गिर जाते हैं। जब रात को हमारे माता-पिता, भाई-बहन व अन्य लोग अपने काम पर से नशे की हालत में घर वापस आते हैं तो उस दौरान भी उनके साथ कई बार दुर्घटना हुई है। कुछ के माता-पिता की मृत्यु भी हो गई है। इसी परेशानी को देखते हुए हम बच्चे चाहते हैं कि हमें और हमारे माता-पिता या अन्य लोगों की सुरक्षा हेतु पटरियों के किनारे दीवार का निमार्ण किया जाए जिससे हम बच्चे दुर्घटना होने के डर से चिंतित न रहें और यहां के लोगों का जीवन सुरक्षित हो सके।

बच्चों ने बनाया अपना समूह

बातूनी रिपोर्टर: रूस्तम, रिपोर्टर: ज्योति

सराय काले खां में जो कामकाजी बच्चे हैं वह शिक्षित नहीं हैं। इसका कारण है कि यह काम में लिप्त रहते हैं। जब सुबह होती है तो बच्चों के कंधों पर स्कूल बैग न होकर इन बच्चों के कंधों पर कबाड़ा बीनने वाला बोरा होता है। यह बच्चे शिक्षा से संबंधित कुछ भी नहीं जानते हैं। इनको केवल इतना ही ध्यान रहता है कि अगर कबाड़ा नहीं मिला तो हमारे घर का खर्चा कैसे चलेगा। इसलिए यह अलग-अलग जगहों पर घूम-घूम कर लोहा, प्लास्टिक और बोतल बीनने का काम करते हैं।

ज्यादातर बच्चों ने बताया कि जब हम कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो हम लड़के अलग हो जाते हैं और लड़कियां अलग हो जाती हैं। हम बच्चे दो समूह में बंट जाते हैं। अपना-अपना समूह बनाकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं। ऐसा हम बच्चे

इसलिए करते हैं ताकि कोई भी व्यक्ति बच्चों के साथ किसी भी तरह से छेड़छाड़ न कर सके।

बच्चों से बात करने पर पता चला कि जब वह अकेले कबाड़ा बीनने जाते थे, तो उन्हें बहुत परेशानी होती थी; क्योंकि वह अपना कबाड़ा एक जगह पर जमा कर देते थे और निगरानी करने वाला कोई नहीं रहता था। उनका कबाड़ा चोरी करके कोई और बेच देता था, जिसके कारण घर पर भी मार पड़ती थी। जब से इन बच्चों ने अपना समूह बनाया है और यह इकट्ठा होकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं, तो इनके पास कबाड़ा भी भारी संख्या में जमा हो जाता है तथा कोई भी व्यक्ति इन बच्चों का माल चोरी नहीं कर पाता है। अब यह बच्चे एकजुट होकर काम करते हैं। बच्चों ने कहा कि हम बच्चे एक-दूसरे की हिम्मत बने रहते हैं। जब से हमारा समूह में काम करना शुरू हुआ है, तभी से हमारा कबाड़ा अब कोई चोरी नहीं करता है। हमारी मेहनत का फल हमें आधा नहीं, बल्कि पूरा मिलता है। एकता से ही हम बच्चों में हिम्मत आई है और ज्यादा फायदा भी होता है।

खुले में शौच करने को मजबूर हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: रूस्तम, रिपोर्टर: ज्योति

दिल्ली में आज भी कई इलाके ऐसे हैं, जहां किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है। और तो और, उन इलाकों में शौचालय भी नहीं बने हैं। जैसे कि कोटला में शौचालय नहीं हैं। लोगों की बड़ी संख्या होने के बावजूद लोग खुले में ही शौच करते हैं। ऐसी ही एक कॉलोनी की हम बात कर रहे हैं, जो साईं बाबा मंदिर के आसपास है। वहां भी बच्चो के लिए शौचालय नहीं बने हैं। यह वह बच्चे हैं, जो सड़क के किनारे पंडाल डालकर रहते हैं। शौचालय न होने के कारण छोटे बच्चे और लड़कियों को बहुत परेशानी होती है। क्योंकि बच्चों को

शौच के लिए आस-पास बनी झाड़ियों में ही जाना पड़ता है, जहां वह खुले में ही शौच करते हैं। इन बच्चों को खासतौर पर बहुत दिक्कत होती है। क्योंकि जब लड़कियां खुले में शौच करती हैं, तो बड़े-बड़े लड़के उन्हें छुप-छुप कर देखते हैं। इसके अलावा जो लोग अपनी गाड़ियों से सफर करते हैं, वह भी यात्रा करने के दौरान उन लड़कियों को देखते हैं। कुछ तो उनकी शौच करते हुए वीडियों तक बना लेते हैं। इस रोज-रोज की समस्या से लड़कियां और छोटे बच्चे बहुत परेशान हैं। बच्चे यहां हमेशा असुरक्षित महसूस करते हैं। शौचालय न होने की वजह से बच्चों और लड़कियों को अलग-अलग समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बच्चे चाहते हैं कि जहां हम रहते हैं, वहीं पर उनके लिए जल्द से जल्द शौचालय बनवाए जाएं; ताकि यह बच्चे शोषण का शिकार न हों। क्योंकि खुले में शौच करने से बीमारियां पैदा होती हैं और वातावरण भी गंदा होता है।

क्यों करते हैं छोटे बच्चों पर अत्याचार ?

बातूनी रिपोर्टर: सचिन, रिपोर्टर: ज्योति

पत्रकार ने जब बच्चों के बीच सराय कालें खां में सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की, तो पता चला कि जब बच्चे अपने काम से समय निकालते हैं तो वह पार्क में खेलने जाते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि पार्क में जो बच्चे बड़े होते हैं, वह छोटे बच्चों के साथ मारपीट करते हैं और छोटे बच्चों से उनके खेलने का सामान छीन लेते हैं। सामान के साथ-साथ जो भी उनके पास खाने-पीने के लिए कुछ पैसे होते हैं, वह भी छीन लेते हैं। जब छोटे बच्चे इनसे कुछ बोलते हैं कि आप हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों करते हो तो बड़े बच्चे हमें डराने के लिए हमसे कहते हैं कि हम तुम्हारे माता-पिता से झूठी शिकायत कर देंगे और यह बड़े बच्चे ऐसा ही करते हैं। हमारे माता-पिता भी हमारी बात पर विश्वास नहीं करते हैं और उनकी बातों में आकर वह भी हमें मारते हैं। हम जब अपने माता-पिता को बताते हैं, तो वह हमारी एक भी बात नहीं सुनते हैं। उल्टा हमें ही समझाने लगते हैं कि जरूर तुमने ही कुछ गलत काम किया होगा, तभी यह लोग घर पर शिकायत करने आए हैं। इस तरह हमारे माता-पिता भी हमें फटकार लगाते हैं। बच्चे चाहते हैं कि बड़े बच्चों की गलत हरकतों से उन्हें आजादी मिले।

जुआ के लालच में बच्चे छोड़ रहे हैं स्कूल, क्लास

बातूनी रिपोर्टर: संजना, रिपोर्टर: ज्योति

पत्रकारों ने जब पूर्वी दिल्ली के एक क्षेत्र में विजिट किया। इस दौरान पता चला कि इस क्षेत्र में बड़े व्यक्ति रेलवे लाईन के किनारे बड़ी संख्या में प्रतिदिन जुआ खेलते हैं। जब बच्चे स्कूल जाते हैं, तो वह स्कूल जाने वाले बच्चे जुआ खेल रहे व्यक्तियों को देखते हैं। उन्हें देखकर बच्चों का स्कूल जाने का मन नहीं करता है। क्योंकि जो व्यक्ति जुआ खेल रहे होते हैं, वह पैसो से जुआ खेल रहे होते हैं। यह लालच ही बच्चों को स्कूल जाने से रोक रहा है। इसलिए बच्चे जुआ खेलने की ओर प्रेरित हो रहे हैं। इस बारे में बच्चों के माता-पिता को ज्ञात नहीं है कि उनके बच्चे जुआ खेलने की ओर बढ़ रहें हैं। इन बच्चों के माता-पिता तो कोठियों में काम करने के लिए चले जाते हैं। इसलिए इनके माता-पिता को यह पता नहीं चल रहा है कि बच्चे स्कूल के नाम पर जुआ खेलने के लिए जा रहे हैं। यह स्कूल

जाने वाले बच्चे अपने-अपने घरों से कुछ पैसे माता-पिता से लेकर आते हैं। माता-पिता से पैसे न मिलने पर वह अपने घरों से चोरी करके पैसे लेकर आते हैं और उन पैसो से जुआ खेलते हैं। इसका गहरा असर इनकी शिक्षा पर पड रहा है। क्योंकि जुआ खेलने की वजह से यह स्कूल नहीं जा रहे हैं। जब इनके माता-पिता शाम को अपने घर वापस लौटते हैं, तो वह अपने बच्चो से पूछते हैं कि स्कूल गए थे, तो बच्चे बड़ी आसानी से अपने माता-पिता से झूठ बोल देते हैं कि वह स्कूल गए थे। बच्चे चाहते हैं कि रेलवे लाइन के किनारे जुआ खेलने वाले लोगों को वहां से हटाया जाए, ताकि बच्चे जुआ की लत से बच सकें।

माता-पिता के कारण बच्चे हुए नशे में लिप्त

बातूनी रिपोर्टर: रूस्तम, रिपोर्टर: ज्योति

8 से 16 साल तक के बच्चे खेलने-कूदने और पढ़ाई-लिखाई करने की उम्र में गलत संगतों में पड़ते जा रहे हैं। वे नशा करना भी सीख रहे हैं। ऐसी ही एक जगह है जिसका नाम गुप्त रखा गया है। यहां पर बच्चे खुलेआम गुटखा, तम्बाकू और शराब का नशा करते हैं। पुल के नीचे और कुछ घरों के अंदर भी शराब बिकती है। यह लोग इन छोटे बच्चों को नशीले पदार्थ देने से कभी मना नहीं करते हैं। जो बच्चे नशा करते हैं इनको किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता है। क्योंकि इनके माता-पिता खुद भी नशा करते हैं, जो अपने बच्चों से भी मंगवाते हैं। कभी-कभी तो माता-पिता अपने बच्चों के साथ ही अपने घर में बच्चों के दोस्तों को बुलाकर एक साथ नशा करना शुरू कर देते हैं।

पत्रकार को पता चला कि यह छोटे बच्चे अपने सारे दोस्तों के साथ इकट्ठे होकर बहुत ही खुशी से अपने ही घर में नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि इन बच्चों के माता-पिता भी इसमें शामिल हैं। वह अपने बच्चों का भविष्य खुद अपने सामने ही खराब करवा रहें हैं। माता-पिता अपने बच्चों को नशे की हालत में भीख मांगने के लिए भेज देते हैं।

इस मोहल्ले में पुलिस अधिकारी भी चक्कर लगाने के लिए आते हैं लेकिन उन्हें इस बारे में भनक तक नहीं है जिससे इन बच्चों के अंदर बिल्कुल भी डर नहीं है। शराब, गुटखा, बीड़ी, नशा करने वाले बच्चों में से पत्रकार ने एक बच्चे से बात की। उस बच्चे ने बताया कि भूतकाल में हम बच्चे नशा नहीं करते थे। हमारे माता-पिता ही ऐसे हैं, जो दिनभर नशा करते हैं। माता-पिता के साथ हम पुल के नीचे रहते हैं, इसलिए हमारे माता-पिता जब भी नशा करते हैं, तो हमें भी नशा करने की लत लग गई और हम अपने माता-पिता के साथ नशा करने लगे। अब हम खुद नशा खरीद कर लाते हैं। नशा खरीद कर लाने के बाद हम अपने दोस्तों को भी नशा करने के लिए दे देते हैं, क्योंकि उन्हें भी नशे की लत लग चुकी है।

पीने के पानी का अभाव

बातूनी रिपोर्टर: आदित्या,
रिपोर्टर: किशन, नोएडा

पत्रकार ने विजिट के दौरान देखा कि नोएडा सेक्टर 5 में बसी एक बस्ती में रह रहे बच्चे पानी भरने के लिए रोज सुबह 7 बजे से 9 बजे तक जाते हैं। यह देख पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की और जानना चाहा कि तुम रोज इतनी सुबह पानी भरने क्यों जाते हो ? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने अपनी परेशानी के बारे में बताते हुए कहा कि हमारे माता-पिता हमें रोज सुबह 7 बजे पानी भरने के लिए पानी की टंकी पर भेजते हैं लेकिन लाईन में लगने के बावजूद भी हमें पानी नहीं मिलता है, क्योंकि यहां पानी की सुविधा बहुत कम है। इसलिए हम सभी बच्चे पानी के लिए इधर-धर भटकते रहते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मुस्कान ने कहा कि सरकार को जब हमारी जरूरत पड़ती है, तो वह हमारे पास वोट मांगने आ जाती है और वोट ले लेती है लेकिन हमें क्या परेशानी आ रही है, यह जानने की कोशिश नहीं करती। यहां के 10 साल की उम्र से लेकर 17 साल तक की उम्र के बच्चे पानी भरने को जाते हैं। हम बच्चे रोज कम से कम दो घंटे केवल पानी भरने के लिए ही लाईन में लगते हैं, पर फिर भी हम बच्चों को पानी नहीं मिल पाता है; क्योंकि जो दूसरे बच्चों के माता-पिता हैं, वह हमसे जबरन हमारा नम्बर छीनकर पानी भर लेते हैं। जब हमारा नम्बर दुबारा आता है तो 9 बजे पानी आना बंद हो जाता है। हमारे माता-पिता हमें डांटते हैं कि पानी क्यों नहीं भर पाए। जब हम अपने माता-पिता को पानी नहीं भर पाने का कारण बताते हैं, तो हमारे माता-पिता का झगड़ा उन लोगों के माता-पिता के साथ हो जाता है, जो हमें पानी नहीं भरने देते हैं। हम बच्चे इस रोज-रोज के झगड़ों से बहुत परेशान हो चुके हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि हमारे यहां ज्यादा संख्या में टोंटियों का निर्माण किया जाए, ताकि हमें पानी के लिए भटकना नहीं पड़े।

असुरक्षित लड़कियां

बालकनामा ब्यूरो

पुल के नींचे रहने वाले बच्चों की संख्या 50 है, जो अपने माता-पिता और अपने दोस्तों के साथ रहते हैं। जहां वह रहते हैं उसमें न कोई दरवाजा है, न ही कोई छत, सिर्फ पुल की छाया है, जिसमें कोई भी असाानी से प्रवेश कर सकता है। जब पत्रकार ने देखा तो बच्चों से पूछा कि आप लोग ऐसे जगह पर कैसे रहते हैं ? रैन बसेरों में क्यों नहीं रहते हो ? तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि भईया हम बच्चों का यहां पर रहना एक मजबूरी है। क्योंकि हमारा गांव में कोई कामकाज नहीं चलता है। इसलिए हमारे माता-पिता यहां पर काम करने के लिए आए हैं। हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि एक अच्छा रूम लेकर उस में सुरक्षित रहें। और बच्चों के लिए रैन बसेरे भी नहीं बने हुए हैं, परिवार वालों के लिए रैन बसेरे बने हुए हैं लेकिन वह रैन बसेरे पहले से ही इतने भरे हुए हैं कि उसमें किसी और को जगह नहीं मिल सकती है। इसलिए हम बच्चे अपने माता-पिता के साथ पुल के नीचे रहते हैं और दूर-दूर जगह पर भीख मांगने के लिए चले जाते हैं। कड़ी मेहनत करने के बाद हम अपना पेट भर पाते हैं। हम बच्चों को इस पुल के नीचे रहने में बहुत परेशानी होती है। क्योंकि यहां पर किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं है। लड़कियां खुले.में शौच करने के लिए जाती हैं। जब मम्मी रहती हैं तो हम लड़कियां मम्मी के साथ शौच के लिए जाते हैं। लेकिन जब मम्मी घर पर नहीं रहती हैं तो डर लगता है कि कैसे शौच करने के लिए बाहर खुले में जाएं। वहां पर बड़े-बड़े लड़के नशा करते हैं और हम लड़कियों को देखकर बहुत उलटा सीधा बोलते हैं। रात को जब हम पुल के नीचे सोते हैं तो उस वक्त भी डर लगता है, क्योंकि यहां पर छोटे बच्चों को भी उठाकर ले जाते हैं। एक साल पहले की बात है। यहां से दो छोटी लड़कियां उठ गईं, जिनका अभी तक पता नहीं चला कि कहां गईं ? क्या हुआ ? कोई खबर ही नहीं मिली। उनके माता-पिता भी यहां से चले गए। ऐसी ही घटना से हम बच्चों को डर लगा रहता है। हम बच्चे यही चाहते हैं कि कोई ऐसी जगह हो जहां पर हम बच्चे सुरक्षित रह सकें।

पार्क में बच्चों को नहीं है खेलने की इजाजत

रिपोर्टर: किशन, पश्चिमी दिल्ली

पश्चिमी दिल्ली में बसी बस्ती में एक पार्क बना हुआ है, जहां पर पहले बच्चे खेलने-कूदने जाते थे लेकिन अब इस पार्क को लोगों ने कपड़ों का गोदाम बना दिया है। इस पार्क के अंदर जो कपड़ों से भरा गोदाम बना हुआ है, उस गोदाम के अंदर बहुत से लोग शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं, और अपने कपड़ों से भरे गोदाम में काम करते हैं। इस दौरान वह आपसी बातचीत के दौरान अश्लील बातों का भी इस्तेमाल करते हैं। बच्चे इस पार्क में जब भी खेलने-कूदने के लिए जाते हैं, तो यह लोग बच्चों को मारते हैं और उनके साथ गाली-गलौज करते हैं और पार्क में खेलने नहीं देते हैं तथा उनके साथ मारपीट करके उन्हें पार्क में से भगा देते हैं। हम बच्चों के लिए कोई भी व्यक्ति आवाज नहीं उठाता है। वह हम बच्चों को बिना वजह मारते हैं और हमें पार्क में खेलने भी नहीं देते हैं। इसलिए बच्चे खेलने-कूदने से वंचित हैं। इन व्यक्तियों से बच्चे बेहद परेशान हैं। बच्चे इनसे बहुत डरते हैं। यदि हम बच्चे पार्क के बाहर भी खेलते हैं तब भी यह लोग हमें डराते-धमकाते हैं। क्योंकि पार्क के बाहर शराब की दुकान है, जहां लोग शराब पीने के लिए आते हैं, इसलिए हम बच्चे पार्क के बाहर भी नहीं खेल पाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लोहा बीनने के कामों में लिप्त बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: चंदन,
रिपोर्टर: किशन नोएडा

नोएडा में रहने वाले बच्चों के साथ पत्रकार बातचीत किया। बातचीत में पत्रकार ने जाना कि बच्चे किस प्रकार परेशानियों से जूझ रहे हैं। जिस स्थान पर बच्चे परेशानी से जूझ रहे हैं, उस स्थान का नाम हम इस खबर में गोपनीय रख रहे हैं, ताकि बच्चे असुरक्षित महसूस न करें। हमें बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता बेलदारी का काम करने के लिए जाते हैं और बच्चे दूर-दूर जगहों पर लोहे का कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। इन बच्चों के पास एक डंडे में बड़ी चुम्बक लगी होती है जिससे यह बच्चे लोहा बीनने का काम करते हैं। इसलिए यह बच्चे अक्सर उन जगहों पर जाते हैं, जहां अधिकतर नई इमारतों का निर्माण किया जाता है। ऐसी जगहों पर जाकर यह अपनी चुम्बक से लोहा बीनते हैं और जो लोहा बड़े पत्थरों के तले नीचे दबा होता है। उस लोहे को निकालने के लिए बच्चे भारी पत्थर हटाते हैं और उसके नीचे से लोहा निकालते हैं। इस दौरान बच्चों के हाथ जख्मी भी हो जाते हैं। क्योंकि पत्थर बहुत भारी और बड़े-बड़े होते हैं। बच्चों के हाथ जख्मी होने के बाद यह आसपास के डॉक्टर को दिखाकर पट्टी करवा लेते हैं और फिर से वही काम करने के लिए दूसरी ओर रवाना हो जाते हैं। लोहा बीनने का काम बच्चे सुबह 10 बजे से ही शुरू कर देते हैं और शाम को 5 बजे तक लोहा बीनकर अपने घर चले जाते हैं। बच्चे दिनभर में 40 से 50 किलो तक लोहा बीनकर इकट्ठा कर लेते हैं और अपनी बस्ती के ठेकेदार को बेच देते है। बच्चों को 1 किलो लोहा बेचने पर 20 रुपये मिलते हैं। ज्यादा कीमत पाने के लिए बच्चे कभी-कभी दूसरी बस्ती के ठेकेदार को लोहा बेच देते हैं तो इनका ठेकेदार बच्चों को डांटता है।

गटर की गंदगी से फैल रहा प्रदूषण

बातूनी रिपोर्टर: चंदन,
रिपोर्टर: किशन, नोएडा

यह खबर नोएडा सेक्टर 18 की है। जब हमारे पत्रकार बच्चों से बात कर रहे थे, तो पत्रकार ने महसूस किया कि गलियों में बहुत ज्यादा गंदगी है और बदबू आ रही है। बच्चों ने इसका कारण बताया कि हमारे घर के थोड़े आगे जाकर बहुत सारे गटर खुले हुए हैं। यह सभी गटर आपस में मिले हुए हैं। जब यह गटर भर जाते हैं, तो सड़कों पर बहुत गंदगी फैल जाती है। उसमें से बेहद गंदी बदबू आने लगती है। इस कारण हम बच्चों को वह रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते से जाना पड़ता है। बच्चों ने यह भी बताया कि गंदगी को हमारे यहां के कर्मचारी भी साफ नहीं करते हैं। क्योंकि उस गटर में से मलमूत्र इत्यादि निकलता है और सड़कों पर फैल जाता है। उसके गंदे पानी से ही पूरे मोहल्ले में भयानक बदबू फैल जाती है। इसी वजह से सफाई कर्मचारी गटर की साफ सफाई करने से कतराते हैं। अधिकतर बच्चों के घरों के आगे ही गटर बने हुए हैं। इसलिए बच्चों को ज्यादा परेशनियों का सामना करना पड़ता है। हमारे माता-पिता गटर की साफ-सफाई करने के लिए सफाई कर्मचारियों को अलग से 300 रुपया देते हैं, ताकि उनकी गली में सफाई रहे। उनके बच्चे बीमार न पड़ें और उन्हें दूसरे रास्ते से न जाना पड़े। वे सुरक्षित रास्ते से ही आना-जाना कर सकें। इस गटर की गंदगी के चलते यहां के बहुत सारे बच्चे बीमारियों का शिकार भी हुए हैं।

बच्चों ने पत्रकार को बताया कि जो छोटे छोटे बच्चे होते हैं, वह अधिकतर दूसरे रास्ते का उपयोग नहीं करते। वह गंदगी वाले रास्ते से ही आना-जाना कर लेते हैं। इसलिए उनके पैरों में गंद लग जाती है। इसी कारण बच्चे समय-समय पर बीमार पड़ते रहते हैं।

बालमजदूरी में लिप्त बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: संजना, रिपोर्टर: पूनम

आगरा शहर के एक इलाके में 30 से भी ज्यादा बच्चे ऐसे हैं, जो अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए पत्थर का ताजमहल बनाने, चमड़े की कतरन छांटने का काम करते हैं। जब इन बच्चों से पत्रकार ने बातचीत की तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि चमड़े की कतरन वाला हमारा एक मालिक है। वह हम बच्चों से ठेके पर काम कराता है। हम बच्चों को एक बड़ा बोरा चमड़े की कतरन छांटने का 20 रुपए मिलते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि जब वे पत्थर से डिजाईन बनाते हैं तो किस प्रकार परेशानी का सामना करना पड़ता है? धूल-मिट्टी बहुत निकलती है, जो नांक में जाती है। उससे छाती में बहुत तेज दर्द होता है और जब वह चमड़े की कतरन छांटते हैं तो उसमें बहुत बदबू आती है। इससे हमें बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है। हमें सांस लेने में बहुत परेशानी होती है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोग पत्थर से बच्चों के लिए खेलने का सामान बनाने के बाद इसको क्या करते हो? तो 14 वर्षीय बालक ने बताया कि खिलौने का पत्थर से आकार बनाने के बाद उसे डिब्बे में पैक करते हैं, फिर बाजार में सेल करने के लिए जाते हैं। लोग एक पीस का 15 रुपए देते हैं। कभी-कभी तो हमारा सामान नहीं बिकता है तो हम बच्चों को 10 रुपए का एक पीस बेचना पड़ता है। और बेचकर सारे पैसे मालिक को देते हैं। कभी-कभी मालिक अच्छे मूड में होते हैं तो ज्यादा पैसे देते हैं, नही तो 50 रूपया भी मिलना मुश्किल होता है। हम बच्चों को इसके अलावा और कुछ काम आता भी नहीं है। मेरे माता-पिता भी शुरू से यही करते आ रहे हैं। इसलिए हम बच्चों से यही काम करा रहे हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपलोगों का स्कूल जाने का मन नहीं करता है ?

14 वर्षीय बालक ने बताया कि जब मैं बाजार में सामान बेच रहा होता हूं, तो कोई बच्चा स्कूल की ड्रेस में आते हैं, तो मेरा भी दिल अंदर से बोलता है कि काश मैं भी स्कूल जाता, तो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते। दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी पढ़ना-लिखना आता। लेकिन हम बच्चों के नसीब में पढ़ाई-लिखाई नहीं है। क्योंकि मेरे पिता शराब पीते हैं, उनको खाना मिले या नहीं मिले शराब तो जरूर मिलनी चाहिए, नहीं तो घर में मारपीट शूरू कर देते हैं।

रेल की पटरियों के किनारे खेलते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: ज्योति,
रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

बालकनामा की पत्रकार आंचल ने श्रमविहार नगर में विजिट किया, तो वहां देखा कि कुछ बच्चे रेल की पटरियों के किनारे खेल रहे थे। पत्रकार ने देखा कि बच्चे रेल की पटरियों के किनारे खेल में मगन हैं और वहीं से रेल भी गुजर रही है। रेल की पटरियों के किनारे बच्चों के खेलने की तहकीकात करने के लिए आंचल ने श्रमविहार की बातूनी रिपोर्टर ज्योति से बात की तो उसने बताया कि बस्ती में कहीं भी बच्चों के लिए खेलने की उचित जगह नहीं है। इसलिए बच्चों का जब भी खेलने का मन करता है तो अधिकतर बच्चे रेल की पटरियों के किनारे खेलने के लिए अक्सर चले जाते हैं। उसने यह भी बताया कि पास में ही एक आर पी एफ कॉलोनी में पार्क बना है। उस पार्क में बच्चों को खेलने नहीं दिया जाता है। यदि कोई बच्चे खेलते हुए लोगों को दिखाई दे जाते हैं, तो वह उन्हें भगा देते हैं और उनके साथ अपशब्द का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए बच्चे रेल की पटरियों के पास खेलने जाते हैं। रेल की पटरियों पर बहुत सी रेल गुजरती रहती हैं। बच्चे उस समय भी अपने खेल खेलने में मगन रहते हैं। ऐसे में बच्चों कर जान का खतरा रहता है। लेकिन बच्चे क्या करें ? जब बच्चों के लिए खेलने के लिए उचित जगह नहीं है, तो बच्चे पटरी के किनारे ही खेलकर खुश रहते हैं।

खदरी क्रोसिंग में पानी की समस्या

बातूनी रिपोर्टर: रोहित,
रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

हमारे बातूनी रिपोर्टर रोहित ने बताया कि हमारे मडियाँव कॉन्टेक्ट प्वाईंट पर खदरी क्रोसिंग में झोपड़ पट्टी में लगभग 90 लोग पानी भरने के लिए रोज आते हैं। चिंता का विषय यह है कि हमारी इस झोपड़पट्टी में केवल एक ही पानी की टंकी लगी हुई है जिसकी सप्लाई जानकीपुरम ट्यूबवेल से होती है। जानकीपुरम ट्यूबवेल से और भी अन्य जगह पानी की सप्लाई इसी लाईन के द्वारा की जाती है। इस वजह से मडियाँव तक पहुंचते-पहुंचते पानी का बहुत कम प्रेशर होता है जिससे पानी कम और धीमी रफ्तार से आ पाता है। जब टंकी में पानी आता है, तो लगभग 70 से 80 लोग एक साथ पानी भरते हैं। इस भारी भीड़ में स्कूल जाने वाले कुछ बच्चे भी पानी भरने आते हैं। उन्हें पानी भरने का मौका नहीं मिल पाता है। बच्चे पानी भरने की वजह से स्कूल जाने के लिए रोज लेट भी हो जाते हैं। कभी-कभी बच्चे पानी भरने की वजह से अपना स्कूल बंक कर देते हैं।

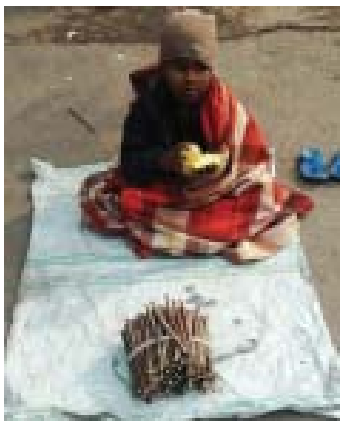

दातून बेमकर करते हैं गुजारा

बातूनी रिपोर्टर: शांति,
रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

चार बाग में बसी बस्ती के आसपास रहने वाले लगभग 10 सड़क एवं कामकाजी बच्चे ऐसे हैं, जो रोज सुबह उठकर रेलवे स्टेशनों पर काम करने के लिए जाते हैं। जब बालकनामा पत्रकार इन बच्चों से मिला तो उसने यह जानने का प्रयास किया कि आप रोज सुबह-सुबह उठकर रेलवे स्टेशन पर क्या काम करने के लिए जाते हो? बच्चों ने बताया कि हम रेलवे स्टेशनों पर दातून बेचने का काम करते हैं। इसलिए हम रोज सुबह जल्दी उठकर स्टेशनों की ओर भागते हैं ताकि जो यात्री हैं, उन्हें हम दातून बेचकर कुछ पैसे कमा सकें। 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कान्ति ने बताया हम रोज सुबह जल्दी उठकर अपने दोस्तों के साथ रेलवे स्टेशन जाती हैं और दातून बेचती हैं। इससे हम जो भी पैसे कमाती हैं, वह अपने घर में देती हैं। क्योंकि हमारे घर की आर्थिक स्थिति बेहद खराब है, इसलिए हमें दातून बेचने जाना पड़ता है। कांति ने यह भी बताया कि उसे पढ़ने-लिखने का बहुत शौक है, पर काम करने के चलते उसे पढ़ने का समय ही नहीं मिलता है। इसलिए वह पढ़ने नहीं जाती है। पत्रकार ने बाकी बच्चों से भी जानने का प्रयास किया कि केवल दातून बेचने के लिए स्टेशनों पर ही क्यों जाते हैं? तो 13 वर्षिय (परिवर्तित नाम) नेहा ने बताया कि हम इसलिए स्टेशनों पर दातून बेचने के लिए जाती हैं, क्योंकि जो यात्री होते हैं वह दातून अक्सर खरीद लेते हैं। उनके पास इससे अच्छा साधन दांत साफ करने के लिए रेल में नहीं मिलता है। रेलवे स्टेशन पर दातून बिक जाते हैं। क्योंकि मजबूरी में यात्रियों को हमसे दातून खरीदना पड़ता है। इसलिए स्टेशनों पर हम बच्चे दातून बेचने का काम कर रहे हैं।

तकलीफ से गुजरता है हर दिन

बातूनी रिपोर्टर: पवन,
रिपोर्टर: किशन, पश्चिमी दिल्ली

छोटे-छोटे मासूम बच्चे अपने गुजारे के लिए पूरे दिन मार्किट में भूखे-प्यासे खिलौने और नाड़े आदि बेचने का काम करते हैं। जब इन काम करने वाले बच्चों से पत्रकार मिला और उनसे बातचीत की तो 15 साल के एक बालक ने बताया कि भईया हम बच्चों को इस मार्किट के अंदर सामान बेचने में बहुत परेशानी होती है। पहले सिर्फ गार्ड अंकल जी मारते थे। अब तो पुलिस वाले भी हम बच्चों को मारते हैं। इसलिए हम बच्चे एक ही मार्किट में सामान नहीं बेचते हैं। अलग अलग जगह की मार्किटों में जाकर अपना सामान बेचते हैं। जैसे कि सरोजनी

नगर मार्किट; या जहां पर मेला लगता है, उस जगह पर बेचते हैं।

14 साल के दूसरे बालक ने बताया कि हमलोग सफदरजंग एयरपोर्ट के पास जो पुल है, उसके नीचे रहते हैं। जो सामान हम बेचते हैं वह हमारे बड़े भाई और पापा सदर बाजार से खरीद कर लाते हैं। क्योंकि सदर बाजार में सामान किलो की दर से मिलता है। अगर हम नाड़े खरीदकर लाते हैं तो वह बहुत उल्झा हुआ रहता है जिसे हम बच्चे खुद सुलझाते हैं और सुलझाने के बाद नाड़े के कई पोले बनाते हैं फिर हम बच्चे नाड़े के 100 पोले लेकर मार्किट में जाते हैं। पूरे दिन की दुकानदारी करके जो पैसा हम कमाते हैं, उसी से हमारे घर-परिवार का खर्चा चलता है। लेकिन पुलिस वाले भईया आए दिन किसी न किसी बच्चे को मारते-पीटते रहते हैं। बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता भी लालबत्ती पर यही सामान बेचते हैं, लेकिन वे मार्किट में नही आते हैं। क्योंकि उन्हें डर रहता है कि पुलिस जब हम बच्चों को इस प्रकार से मार-पीटकर भगा देती है तो उनके साथ किस तरह से व्यहार करेगी।

अच्छा वातावरण बच्चों को देने के लिए बड़ों को भी छोड़ना पड़ेगा जुआ

बातूनी रिपोर्टर: सुमन,
रिपोर्टर: संगीता, लखनऊ

यह सब जानते हैं कि बड़े बुजुर्ग को देखकर बच्चे भी वैसा ही सीखते हैं, जो हमारे बड़े बुजुर्ग करते हैं। यहां हम ऐसी ही बात कर रहे हैं। इस खबर में स्थान का नाम गोपनीय रखा गया है। यहां तिरपाल से बनी हुई लगभग 300 झुग्गी-झोपड़ी हैं। यहां के रहने वाले सभी लोग शाम के वक्त अपने काम पर से लौटने के बाद जुआ खेलने के लिए बैठते हैं। जुआ खेलते वक्त आपस में गाली-गलौज भी करते हैं। वर्तमान में इन्हे देखकर हम बच्चे भी इसी प्रकार व्यवहार करने लगे हैं। भूतकाल में कुछ बच्चे पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते थे लेकिन अब बच्चे स्कूल जाने के नाम पर झूठ बोलते हैं। सुबह होते ही बच्चे कंचे का जुआ खेलते हैं और जुए पर पैसे लगाते हैं। इस जुए की बुरी लत की वजह से बच्चे अपने घर का ही सामान बेचने लगे हैं। घर के सामान बेचने से भी इनका खर्चा पूरा नहीं होता है। इसलिए कुछ बच्चों ने कबाड़ा बीनना शूरू कर दिया है।

बच्चों का कहना है कि हमारे पिता हमारे सामने जुआ खेलने बैठते थे। जब हम अपने पिता से बोलते थे कि जुआ बच्चों के लिए गंदी चीज है, तो हमारे पिता बोलते

थे, ऐसा कुछ नहीं है। लोगों को जुआ भी खेलना चाहिए। अब हम बच्चों ने भी जुआ खेलना शूरू कर दिया है। अब हमारे माता-पिता को परेशानी हो रही है। हमारे माता-पिता अगर उस वक्त ही हमें इस लत में नही फंसाते तो शायद आज हम बच्चे जुए की लत में नही पड़ते। हम बच्चे भी अपने पिता की तरह आपस में गाली-गलौज करने लगे हैं। माता-पिता का कहना है कि हमें क्या पता था कि यह जुआ खेलना इतना महंगा पड़ सकता है कि बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़ देंगे। अब रोक लगाते हैं तो वह बच्चे अपने माता-पिता का कहना जरा भी नहीं मानते हैं और जुआ खेलते हैं।

शौचालय बनाने की गुहार

बातूनी रिपोर्टर: मुस्कान,
रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

एक स्थान, जिसका नाम गुप्त रखा गया है। इस स्थान पर लगभग चार सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों में रहने वाले कुछ लोग अपने घर का खर्चा चलाने के लिए मजदूरी तथा कबाड़ा बीनने के कार्य करते हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी मिली कि झुग्गी के पास एक बहुत बड़ी नदी है, जो गहरी है। वहां के रहने वाले बच्चों ने बताया कि नदी के किनारे झुग्गी में रहने वाले लोग वस्त्र व

तिरपाल डालकर रहते हैं। यहां शौचलय नहीं बने हैं, जिन्हें हमारे माता-पिता तथा बच्चे इस्तेमाल कर सकें। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) खुशी ने कहा कि समस्या यह है कि हमारे यहां शौचलय न होने की वजह से हमें खुले में ही शौच करना पड़ता है। ज्यादातर नदी के किनारे बैठकर ही शौच करते हैं। नदी में शौच करने के कारण नदी में मलमूत्र रहने से गंदी बदबू और प्रदूषण फैल रहा है। इस वजह से बच्चे नदी के आसपास खेलने के लिए नहीं जाते हैं। क्योंकि नदी के किनारे काफी मलमूत्र जमा हो जाता है। शौच की सारी गंदगी इसी नदी में रहती है। इसी कारण इसमें से बहुत गंदी बदबू आती है। हमारी झुग्गी इसके बहुत नजदीक बनी हुई है। खानपान करते वक्त ऐसा लगता है कि अब उल्टी ही आ जाएगी। क्योंकि कभी पालतू जानवर मर जाते हैं तो लोग उसे भी नदी में फेंकते हैं। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मंजू ने बताया कि हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस समस्या का जल्द से जल्द कोई समाधान निकल जाए, तो हम बच्चों को राहत मिलेगी। क्योंकि इस समस्या की वजह से हम बच्चे आयेदिन बीमारियों के चंगुल में आते जा रहे हैं। जब हम डॉक्टर के पास इलाज कराने के लिए जाते हैं, तो डॉक्टर हमेशा सलाह देते हैं कि आप जिस स्थान पर रह रहे हो, उस स्थान से कहीं और चले जाईए तभी आपलोग इस परेशानी से छुटकारा पा सकते हैं। बच्चों के माता-पिता का कहना है कि अगर हम इस जगह से कहीं और चले गए तो हमारा घर का खर्चा कैसे चलेगा। क्योंकि जिस जगह पर हम अभी रह रहे हैं, वहां काफी सारे निवास हैं तथा कूड़ा कबाड़ा भी अधिक मिलता है। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि हमारे यहां शौचालय बन जाए।

नन्हें कंधो पर काम का बोझ

बातूनी रिपोर्टर: सबा,
रिपोर्टर: आंचल, लखनऊ

बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि पुरनिया सम्पर्क बिंदु पर हमारे साथ पढ़ने वाली एक लड़की जिसका नाम मशीरा है। उसकी उम्र लगभग 10 वर्ष की है, पहले वह भी हमारे साथ रोज पढ़ने के लिए सम्पर्क बिंदू पर आती थी, परंतु काफी दिनों से वह इधर पढ़ने के लिए नहीं आ रही है।

इसका पता लगाया गया कि वह पढ़ने क्यों नहीं आ रही है। पता चला कि वह किसी के घर में काम पर जाने लगी है। क्योंकि उसके पिता जी अब इस दुनिया में नहीं रहे, इसलिए मशीरा कोठी में काम

करने के लिए जाने लगी।

यह बात मशीरा की मम्मी ने छुपाई कि पैसे की तंगी के कारण मशीरा काम करने के लिए जा रही है। मशीरा के लगभग 10 भाई बहन हैं। छोटे भाई-बहनों का पालन पोषण करने के लिए मशीरा को भी काम करना पड़ रहा है। अगर वह काम करने के लिए मना करती है तो उसे उसके घर में डांट पड़ती है। इसलिए मशीरा अब घरों में काम करने के लिए जाती है, जिससे कुछ पैसे कमाकर वह अपने परिवार की आर्थिक मदद करती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

भीख मांगने वाले बच्चों की दुख भरी कहानी

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकारों ने जायजा लिया और यह देखा कि दक्षिण दिल्ली के कई स्थानों पर खास करके यह देखा गया है कि बिहार, उत्तर प्रदेश से परिवार के सदस्यों को दिल्ली जैसी राजधानी शहर में लेकर आते हैं और इस पर अब तक कोई रोकथाम नहीं है। बच्चे न जाने कैसे गांवों से शहरों में काम करने के लिए लाए जाते हैं। बच्चों को काम पर लगाने के बाद उन पर अत्याचार करते हैं। जिन स्थानों पर बच्चे काम करते हैं, वह जगहें सभी को ज्ञात हैं। इसलिए बच्चों के कहने पर पत्रकारों ने स्थानों का नाम गोपनीय रखा है। सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत करने पर यह पता चला कि इनके परिवार वाले इन बच्चों पर बहुत अत्याचार करते हैं। क्योंकि इनके घर में सभी बड़े सदस्य अपने घर में बैठे रहते हैं। कोई काम नहीं करते हैं। छोटे-छोटे मासूम बच्चे को भीख मांगने के लिए भेजते हैं या

किसी छोटे-मोटे ढाबे में उसे बर्तन धोने के काम पर लगवा देते हैं; या किसी चाय की दुकान पर मजदूरी करने के लिए भेजते हैं। इन बच्चों के द्वारा कमाए गए और भीख मांगे कर लाए गए पैसे से यह लोग शराब पीते हैं। अगर यह बच्चे भीख मांगने से या काम पर जाने से मना करते हैं, तो इनके परिवार वाले बच्चों पर अत्याचार करते हैं। इनके साथ मारपीट करते हैं। ये लोग यह समझने के लिए तैयार नहीं हैं कि किस तरह बच्चे भीख मांगकर और काम धंधा करके दो पैसे कमाकर लाते हैं। इनके भीख मांगने वाले बच्चों ने बताया कि जब हम बच्चे सुबह से शाम तक भीख मांगने के लिए जाते हैं, तो हम पूरे दिन भूखे पेट रहते हैं। क्योंकि हम बच्चे को पूरे दिन कड़ी मेहनत करने पर भी भीख नहीं मिलती है। पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद 50 से 60 रुपए तक मिलते हैं। हम अगर यह पैसे अपने खाने में खत्म कर देंगे, तो हम अपने परिवार वाले को क्या देंगे? इस पीढ़ा को हम बच्चों से सहा नहीं जाता है। हम बच्चे इस समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं। क्योंकि हम बच्चों का इस कार्य में मन नहीं लग रहा है। हम बच्चे भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहते हैं। लेकिन लगता है कि यह सपना ही बनकर रह जाएगा।

अध्यापकों द्वारा भी किया जाता है भेदभाव

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर आगरा की है, जहां सरकारी स्कूलों में बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। यह बात हम सभी जानते हैं कि सरकारी स्कूल हर एक धर्म के बच्चे के लिए मान्य हैं। इसके बावजूद आगरा के सरकारी स्कूल में बच्चों को उनकी नीची जाति का अनुभव कराया जाता है। इस स्कूल के अध्यापक बच्चों के साथ जात-पाँत का भेदभाव करते हैं। बहुत गंभीर बात है कि अगर स्कूल के अध्यापक ही बच्चों के साथ भेदभाव करेंगे तो हम बच्चों को और उनके माता-पिता को क्या सही शिक्षा दे पाएंगे ? कुछ छात्रों ने बताया कि जो बच्चे ऊँची जाति के होते हैं, उन बच्चों से तो अध्यापक बहुत स्नेह से बात करते हैं, दूसरी ओर नीची जाति के बच्चों से अध्यापक ठीक से बात भी नहीं करते हैं और उनसे काम करवाते हैं। यह देखकर स्कूल में खाना बनाने वाली कर्मचारी भी इन बच्चों के साथ भेदभाव करती है। जैसे ऊंची जाति वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में ही खाना दिया जाता है और नीची जाति

वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में खाना नहीं देती है, बल्कि उनसे घर से प्लेट लाने के लिए कहती है और उनकी प्लेट में ही उन्हें खाना खाने के लिए देती है। ऊंची जाति वाले बच्चों के झूठे बर्तन हम ही से धुलवाती है। इस वजह से बच्चे पढ़ाई नहीं करते हैं। बच्चों के मन में यह डर बैठा हुआ है कि अगर वह काम नहीं करेंगे तो हमारी स्कूल की अध्यापिका हम बच्चों को स्कूल से बाहर निकाल देगी और हमें कक्षा में नही बैठने देगी। इस डर की वजह से कोई भी बच्चा इस बारे में किसी से भी शिकायत नहीं करता। यह देखकर ऊँची जाति वाले बच्चे हम बच्चों का मजाक उड़ाते हैं और हमें परेशान करते हैं। हम बच्चों से अपना काम करवाते हैं। अध्यापिका बच्चों से स्कूल में झाड़ू लगवाती है। इसके अलावा स्कूली समस्याएं कुछ इस प्रकार हैं; जैसे कक्षाओं में पंखे व लाईट बहुत कम चलता है। पीने के पानी की सुविधा भी स्कूल में मौजूद नहीं है। जब बच्चों को प्यास लगती है तो बच्चों को स्कूल से बहुत दूर जाकर पीने के लिए पानी भरना पड़ता है। बच्चे जहां पानी भरने जाते हैं, वहां बंदरों का समूह भी होता है, इन बंदरों द्वारा कई बार बच्चे जख्मी भी हुए हैं।

कैसे बचें लड़कियां; इस मंडराते खतरे से?

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी समस्या को रखते हुए कहा कि छोटे-छोटे बच्चे बुरी संगत की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इसकी वजह है, बड़े लड़के और लड़कियां। क्योंकि यह बड़े बच्चे भी हमारे मौहल्ले में रहते हैं और बड़े बच्चे प्यार मोहब्बत की ओर बढ़ते ही जा रहे हैं। बच्चों ने बताया कि खुलेआम हम बच्चों के सामने लड़की के साथ घूमते हैं। उस लड़की के साथ गलत भी करते हैं। हम बच्चों में से कुछ बच्चे ऐसे हैं, जो इस बर्ताव को आयेदिन देख रहे हैं। इसी वजह से छोटे बच्चे भी अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़कर अपना ध्यान प्यार मोहब्बत की

ओर बढ़ाने लगे हैं। जैसे बड़े लड़के किसी लड़की से प्यार करते हैं, अगर वह लड़की प्यार करने से इंकार करती है, तो उसी वक्त लड़के अपना हाथ काट लेता है और उस लड़की का नाम अपने हाथ पर ब्लेड से लिखते हैं। यह बात सुनते ही पत्रकार कुछ ऐसी लड़कियों से मिली, जो इसका शिकार हो रही हैं। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि अगर हम लड़कियां किसी लड़के को प्यार करने से मना करती हैं, तो वह बोलते हैं कि मेरे से प्यार नहीं करोगी तो मैं अपने हाथ की नस काटकर जान दे दूंगा। इसकी वजह तुम होगी। और बोलते हैं कि मैं तुम्हारे माता-पिता को बोल दूंगा कि आपकी बेटी के साथ मेरा पहले से ही संबंध है। इसलिए हम लड़कियां इन लड़कों की बातो में आ जाती हैं। यह लड़के हम लड़कियों के साथ गलत भी कर देते हैं। इसलिए हम लड़कियां चाहती हैं कि इस परेशानी से जल्द से जल्द मुक्ति मिले।

एक ही झटके में बदल गया शमीन का जीवन

बातूनी रिपोर्टर: सुमन,
रिपोर्टर: पूनम

यह खबर आगरा स्टेशन के एक बच्चे की है, जो बालकनामा के पत्रकार पूनम को विजिट के दौरान मिली। इसका नाम शमीन है। यह लगभग 15 वर्ष की है। पत्रकार ने शमीन से बातचीत की तो इस दौरान शमीन ने बताया कि वह पहले फिरोजाबाद में रहती थी और वहां पर कोठियों में काम करने के लिए जाती थी। एक दिन जब वह अपने काम पर जा रही थी, शमीन के साथ दुर्घटना हो गई और इस दुर्घटना में उसके दोनों पैर कट गए। जब उसके दोनों पैर इस दुर्घटना में नहीं रहे, तो शमीन को बहुत दुख हुआ। वह बहुत रोई और महीनों उसे इस बात का सदमा रहा कि उसके दोनों पैरों

की बली एक हादसे में हो गई। इस सदमें में शमीन आज भी है। जब भी वह ऐसी दुर्घटना के बारे में देखती या सुनती है, तो उसे अपने साथ हुए हादसे की याद फिर से ताजा हो जाती है। शमीन ने अपना दुख जताते हुए बताया कि इस हादसे के बाद मेरी दादी मुझे आगरा शहर में लेकर आ गई थी। मेरी दादी बहुत बूढ़ी होने के कारण बीमार रहने लगी। फिर मैंने अपना कामकाज ढूंढना शुरू किया, जिससे मैं अपना और दादी का पेट भर सकूं तथा उनका ईलाज करा सकूं। लेकिन मेरे दोनों पैर ना होने की वजह से मुझे कोई समान्य काम नहीं मिला। इसलिए मुझे मजबूरन भीख मांगनी पड़ी। मैं अब अलग-अलग जगह जाकर भीख मांगने का काम करती हूं। शमीन ने बताया कि मैंने कभी सपनों में भी नहीं सोचा था कि मेरे जीवन में एक दिन ऐसा भी आएगा कि मुझे हालातों के चलते भीख भी मांगनी पड़ेगी।

आये दिन बढ़ रही है इस तरह की समस्या

बातूनी रिपोर्टर: सबा,
रिपोर्टर: संगीता

डालीगंज में 'कॉन्टेक्ट प्वाईन्ट' की हमारी बातूनी रिपोर्टर 10 वर्षीय सबा ने बताया कि हमारी बस्ती में पानी का निकास नहीं हो रहा है। इसके कारण हमारे यहां की नालियां पानी से भर गई हैं। नाली का गंदा पानी बस्तियों के आस-पास के गड्ढों में भी भर गया है। इस पानी में मवेशी आकर बैठ जाते हैं, जिससे बस्ती में और भी ज्यादा गंदगी हो जाती है।

पूरी बस्ती में गंदे पानी और कीचड़ की गंदी बदबू आती रहती है। इसी कारण हमारी बस्ती में गंदगी पनप रही है। गंदगी होने के कारण इससे प्रभावित ज्यादातर छोटे बच्चे हो रहे हैं। क्योंकि छोटे बच्चे आसपास खेलते-कूदते हैं और बीमारी का शिकार हो जाते हैं। छोटे बच्चों के अंदर गंदगी से लड़ने की क्षमता कम रहती है। इसलिए बच्चे

गंदगी से जल्दी-जल्दी और बार-बार प्रभावित होकर बीमार पड़ रहे हैं। बच्चे की बेहतर सुरक्षा और उनको स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी हम सबकी है। इसलिए बालकनामा के बातूनी पत्रकार यह अपील करते हैं कि कॉलोनी में जल्द से जल्द साफ-सफाई कराई जाए और बस्ती में हो रहे गड्ढों का भराव कराके उन्हें पक्का किया जाए तथा नालियों में से पानी के निकास की व्यवस्था की जाए, जिससे पानी का भराव न हो सके। इस पानी के भराव होने से ही बस्ती में मच्छरों के साथ-साथ अन्य प्रकार का प्रदूषण भी बढ़ जाता है, जो बच्चों के साथ बड़े लोगों को भी प्रभावित कर सकता है। पत्रकारों ने बताया कि गंदे पानी की गंदगी से अभी तो ज्यादातर बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है, निकट भविष्य में बड़े लोगों के स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा असर पड़ेगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

शिक्षक बने भक्षक

बातूनी रिपोर्टर: सुमन,
रिपोर्टर: पूनम

यह उत्तर प्रदेश के शहर में स्थित प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की खबर है। स्कूल का नाम बच्चों की सुरक्षा के लिए गोपनीय रखा गया है। इस शहर में जो स्कूल है, वह कक्षा 1 से लेकर कक्षा 12 तक का है, जिसमें बच्चे पढने जाते हैं। बालकनामा के सूत्रों से पता चला है कि स्कूल में जो लड़कियां पढ़ने के लिए जाती हैं, वहां के अध्यापक लड़कियों से बड़ी बदतमीजी से पेश आते हैं। इससे उन्हें बहुत बुरा लगता है। आयेदिन लड़कियां अध्यापक के इस व्यवहार से परेशान हो रही हैं। इस स्कूल के अध्यापक शराब का सेवन कर स्कूल में बच्चों को पढाने के लिए आते हैं और लड़कियों के साथ बदसलूकी से बातचीत करते हैं। उनसे अश्लीलता से पेश आते हैं। अध्यापक लड़कियों को अपने पास बुलाकर कभी उनके कंधों पर अपना हाथ रखते हैं, कभी लड़कियों को अपनी बातों में उलझाकर अपने हाथों से उनके व्यक्तिगत अंगो को स्पर्श करते हैं। इस दौरान लड़कियां असुरक्षित महसूस कर रही होती हैं। इस बारे में कई बार हिम्मत जुटाकर लड़कियों ने स्कूल की मुख्य अध्यापिका से भी शिकायत की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हमारी मुख्य अध्यापिका को हमारी बातों पर यकीन नहीं होता। वह हमें डरा-धमका कर हमसे कहती हैं कि इस बारे में यदि हमने किसी अन्य व्यक्ति को बताया तो हमें स्कूल में पढ़ने के लिए मना कर देंगी और स्कूल से बाहर कर देंगी। इस डर की वजह से लड़कियों ने चुप्पी साध रखी है। वह किसी से भी अपनी परेशानी नहीं बताती हैं। वह चाहती हैं कि इस तरह के अध्यापकों को स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के लिए न रखा जाए। इनका चुनाव सही से किया जाना चाहिए।

मां-बाप के साथ बच्चे भी करते हैं मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर: सुमन,
रिपोर्टर: संगीता

हमारे बालकनामा के पत्रकारों ने चारबाग रेलवे स्टेशन पर विजिट किया। वहां बातूनी रिपोर्टर सुमन ने बताया कि यहां बहुत सारे बच्चे काम करने के लिए अपने माता-पिता के साथ आसपास के अलग-अलग क्षेत्रों से आते हैं। यहां आकर अलग-अलग प्रकार का काम करते हैं। जैसे रेलगाड़ी में पानी बेचने का काम, पान मसाला बेचने का काम, गुटखा-तम्बाकू-बीड़ी बेचने का काम करते हैं।

सुमन ने यह भी बताया कि जो बच्चे रेलवे स्टेशन पर रहते हैं, वह कभी-कभी इस प्रकार का काम कर लेते हैं। ज्यादातर बच्चे आसपास के क्षेत्रों से ही काम करने के लिए स्टेशन पर आते हैं। जब पत्रकार ने इन काम करने वाले बच्चों से मुलाकात कर इस विषय पर बातचीत की तो इन बच्चों ने दुख जताते हुए पत्रकार को बताया कि हम जब भी स्टेशन पर काम करने के लिए हैं, तो पुलिस वाले भईया हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं। हमारा बेचने वाला सामान हमसे छीनकर फेंक देते हैं। इससे हमारा बहुत नुकसान होता है।

हम बच्चों को मजबूरी में काम करना पड़ता है। क्योंकि हमारे मां-बाप के पास कोई नियमित रोजगार नहीं है, इसलिए हम अपने माता-पिता के साथ यह काम करते हैं। लेकिन आयेदिन हमारा सामान पुलिस वाले भईया हमसे छीनकर फेंक देते हैं। हमारा नुकसान हो जाता है। हमें बिना वजह अपने मालिक को इसका हजार्ना भी देना पड़ता है। इतना तो हम कमा भी नहीं पाते जितना हम बच्चों को नुकसान हो जाता है। अपनी मेहनत-मजदूरी करके ही हमें दो रोटी मुश्किल से खाने के लिए मिलती हैं। इसपर भी हम बच्चों से इतना बुरा व्यवहार किया जाता है। यदि हमारे माता-पिता को ही कोई रोजगार मिल जाए, तो हम बच्चों को किसी भी तरह का काम नहीं करना पड़ेगा।

बच्चे चाहते हैं बदबूदार गंदगी से छुटकारा

बातूनी रिपोर्टर: विशाल,
रिपोर्टर: संगीता

लखनऊ में बसी बस्ती में रहने वाले बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि हमारी बस्ती में दिन पर दिन गंदगी बढ़ती जा रही है। क्योंकि हमारी बस्ती में चारों ओर कूड़े के ढेर हैं जिसमें पानी भरने की वजह से बहुत गंदगी हो जाती है। कूड़े की गंदगी में आसपास के छोटे-छोटे बच्चे खेलते रहते हैं। वहां पर सबसे ज्यादा परेशानी यह है कि कूड़े के ढेर में आसपास की नालियों का पानी भी जमा हो जाता है। बावजूद इसके कर्मचारी यहां साफ-सफाई करने नहीं आते हैं। 16 वर्षीय प्रेमचंद (परिवर्तित नाम) ने बताया कि लोग अपने घरों का गंदा पानी; जैसे नहाने, कपड़े धोने और बर्तन धोने का गंदा पानी उसी भरे पानी और कूड़े के ढेर में फेंकते हैं। जब से लोग ऐसा करने लगे हैं तभी से यहां पर गंदगी और ज्यादा फैलने लगी है। 14 वर्षीय खुशबू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि लोग अपने बच्चों को शौच कराते हैं और घर में जो मुर्गा, मछली काटते हैं, उसकी गंदगी भी इसी कूडे के ढ़ेर में डाल देते हैं। इसलिए हम बच्चे अब अपने घर के पास नहीं खेल पाते हैं, क्योंकि इतनी बुरी बदबू आती है कि उल्टी आने लगती है। अभी कुछ दिनों पहले हम बच्चों के माता-पिता के साथ लड़ाई भी हुई थी, इस बात को लेकर कि लोग यहां पर गंदगी क्यों डालते हैं। वह हमारे माता-पिता को मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह लोग बोल रहे थे कि हम लोग इस जगह पर रहते हैं, कूडा-कचरा कहां पर डालने जायेगें? हम बच्चों को यहां पर रहने में बहुत परेशानी होती है। 12 साल के एक बालक ने बताया कि हम सभी बच्चे यही चाहते हैं कि जल्द से जल्द उस कूड़े की गंदगी को साफ किया जाए, ताकि इस गंदगी से बच्चों को छुटकारा मिल सके।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की सुरक्षा करने हेतु ग्रुरूग्राम पुलिस आयुक्त कार्यालय में की गई बैठक

वल्ड बुक ऑफ टैलेंट रिकोर्ट से बालकनामा की सलाहकार को मिला नारी शक्ती सम्मान पुरूस्कार

चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे ओपन बेसिक एजुकेशन प्रोग्राम की मदद से 3वी , 5वी, 8वी कक्षा में दाखिल 63 सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने दी परीक्षा

लाजपत नगर और निजामुद्दीन बच्चों के बीच कबड्डी मैंच का रंगारंग कार्यक्रम

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471